Title : **Mother's Day**
Preached by : Dr. W. Eugene Scott, Ph.D., Stanford University
at Los Angeles University Cathedral,
Copy right © 2007 Pastor Melissa Scott

All Rights Reserved

शीर्षक : **मातृ-दिवस**

डॉ. डब्लू. यूजीन स्कॉट (पीएच.डी. स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय) द्वारा
लॉस ऐन्जेलिस विश्वविद्यालय के गिरजेघर में दिया गया संदेश
प्रतिलिप्यधिकार © - 2007 पास्टर मेलिसा स्कॉट-सर्वाधिकार सुरक्षित

Mother's Day - मातृ-दिवस

जिन संदेशों को मैं प्रति वर्ष प्रचार करता हूँ, उन्हें प्रचार करने में, मैं, इस गिरजेघर में इतना विश्वासयोग्य नहीं रहा हूँ, जितना कि मैं अन्य स्थानों में था। इस वर्ष मैं उसी नमूने पर वापस लौट रहा हूँ। और आज मातृ-दिवस है, तो मैं वापस अपने वार्षिक संदेश पर लौट रहा हूँ, जो मेरे पास पुस्तिका के रुप में है। इसका शीर्षक है, *परमेश्वर सब जगह पर नहीं हो सकता?....इसलिये उसने माताओं को बनाया!* मैं सोचता हूँ, कि एक पुस्तिका प्रवचन - मंच (पुलपिट) पर रखी है, यदि कैमरा उसकी तस्वीर लेना चाहता है।

"परमेश्वर सब जगह पर नहीं हो सकता, इसलिये उसने माताओं को बनाया!" यह एक पुरानी यहूदी कहावत है। मैंने शीर्षक में इस के बाद प्रश्न-चिन्ह लगाया है, क्योंकि जब हम इसके विषय में सोचते है, तो हम जानते हैं, कि परमेश्वर सब जगर पर हो सकता है। यही सर्वव्यापकता का सिद्धान्त है। और मैंने देखा, कि किसी ने उसे पुन: छापने के दौरान, मेरे प्रश्न-चिन्ह को विस्मयादि-बोधक चिन्ह में बदल दिया, तो यह भी ठीक है, परन्तु यह एक सुन्दर एवं अद्‌भुत विचार है। "परमेश्वर सब जगह पर नहीं हो सकता, इसलिये उसने माताओं को बनाया," और शायद विस्मयादि - बोधक चिन्ह ठीक है, क्योंकि परमेश्वर, अपने आत्मा के द्वारा, माताओं में होकर कार्य करने से, सब जगह हो भी सकता है। इस पुस्तक में, मैंने माताओं के सम्बन्ध में कुछ कथन शामिल किये हैं। मैं उन्हें फिर से पढ़ूँगा - शायद ये उन लोगों के लिये नये होंगे, जो कि मेरे द्वारा इसे पिछली बार प्रचार करने के बाद, किंग्स हाऊसेस के परिवार में शामिल हुए होंगे।

"न्याय के दिन, अभिलेखक स्वर्गदूत, उस जन को अधिक मात्रा में क्षमा प्रदान करेगा, जो यह कह सकेगा, मैंने अपनी माँ को कभी नहीं जाना।" - चार्ल्स लैम्ब

"मैं जो कुछ भी हूँ, वह मुझे मेरी माँ ने बनाया है।" - जॉन क्विंसी ऐडम्स

"अब तक जो सबसे साहसपूर्ण लड़ाई लड़ी गई,
क्या मैं आपको बताऊँ, कि वह क्या और कब थी?

वह संसार के नक्शों पर आपको नहीं मिलेगी,
वह मनुष्यों की माताओं दारा लड़ी गई।" – जुआकिन मिलर

"एक माता अभी भी माता ही है,
जीवित प्राणियों में सबसे पावन वस्तु।" – कोलरिज

"मनुष्य वे ही होते हैं, जो उनकी माताएं उन्हें बनाती हैं।" – एमर्सन

"युद्ध – क्षेत्र में मरने वाले सैनिक को,
हम कांसा और पटिया देते हैं।
परन्तु एक माँ के लिये,
यह महिमारहित युद्ध है।
वह किसी राष्ट्र के पदक नहीं पहनती।
उसका बिल्ला, उसके चेहरे पर की झुर्रियाँ है।" – अज्ञात

"आयु के वर्ष एक माँ को कष्ट पहुँचाते हैं,
परन्तु उसके प्रेम को कम नहीं कर पाते हैं।" – वुड्सवर्थ

"वह आशीष है, और परमेश्वर ने उसे ऐसा ही बनाया है,
और साप्ताहिक पवित्रता के उसके कार्य,
उसमें से, हिम के समान, खामोशी से गिरते रहते हैं।" – लॉवेल

कुछ लोग, मातृ–दिवस पर किसी रंग का फूल पहनते हैं, जिससे वे दर्शाते हैं, कि उनकी माँ अब इस संसार में नहीं है। एक अन्य जन ने, जिसका यही अनुभव था, और जिसने अपनी माँ को याद किया, ये पंक्तियाँ लिख डालीं:

"वे हमेशा हमारी राह देखने टिकी रहतीं थीं,
परेशान, यदि हम देर से आते,
सर्दियों में खिड़की पर टिकीं,
गर्मियों में फाटक पर टिकीं।
उनके सारे विचारों में हम ऐसे समाए थे
वे हमें कभी नहीं भूल सकती थी।
तो मैं सोचता हूँ, कि वे जहाँ भी हैं,
हमें देख रही होंगी।
हमारे, उन के पास पहुँचने की राह देखतीं,
परेशान यदि हम देर से आए,

स्वर्ग की खिड़की से राह देखतीं,
स्वर्ग के फाटक पर टिकीं।
– मार्ग्रेट विडेमर

जैसा मैंने पहले कहा था, यहूदी लोगों की एक कहावत है: "परमेश्वर सब जगह पर नहीं हो सकता, इसलिये उसने माताओं को बनाया।" किन्तु यदि आप, और आगे बढ़ें तो परमेश्वर जो कि सब कुछ है, एक माँ हो सकता है।

उत्पत्ति 17:1, "परमेश्वर ने इब्राहीम को दर्शन देकर कहा, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।" *एल शैदाइ* यह शाद शब्द से आता है, जिसका अर्थ, स्तन है। इस प्रकार *एल शैदाइ* का अर्थ स्थन–धारी है, और यह उस माता को दर्शता है, जो अपने निस्सहाय बच्चे को स्तनपान कराती है। अत: इसका आशय है, शक्ति प्रदान करने वाला या पोषण करने वाला। यह धर्म–शास्त्र में उन कम चित्रणों में से एक है, जहाँ परमेश्वर अपने आपको एक माँ की भूमिका में प्रस्तुत करता है, जब वह कहता है, "मैं *एल शैदाइ* हूँ।" एथेल क्लिमेंस को याद होगा, कि उसके पिता, डॉ.प्राइस इस नाम का लिप्यान्तरण करके इसे कहते थे, "पर्याप्त परमेश्वर।" वह परमेश्वर, जो कि पर्याप्त है। आपको जो भी चाहिये, वह उसके लिये पर्याप्त है। यह सच है, कि वह माता, जो अपने बच्चे को अपनी छाती से लगाकर, जो कुछ भी उसकी शक्ति तथा पोषण के लिये आवश्यक है, वह प्रदान करती है, और उसे सम्भालती है, वह परमेश्वर के इस चित्र को दर्शाती है, परन्तु परमेश्वर यशायाह 66 में अधिक सुस्पष्ट होता है। *किंग जेम्स अनुवाद* में वह कहता है, "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा," (यशायाह 66:13), "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा।"

अब, आज के संदेश को वहाँ पर पहुँचना है, जहाँ पर आप हैं। यह ऐसा संदेश नहीं है, जहाँ हम धर्म–शास्त्र में से भविष्यवाणियों के तथ्यों को ढूँढ़ेंगे, जो कि इतिहास के ऊपर परमेश्वर के कार्यों को समझने में हमारी सहायता करेंगे। यह हमारे द्वारा चर्चित विषय से परे, कोई धर्म–वैज्ञानिक चर्चा नहीं है, कि धर्म–शास्त्र में दो बार – कम से कम इन दोनों जगहों पर, परमेश्वर हमारे द्वारा अपनाई गई माँ की भूमिका के प्रत्यक्ष ज्ञान को, उस प्रकाशन में जाने देता है, जो वह हमें दे रहा है, कि वह अपने लोगों के लिये क्या होगा; और "जिस प्रकार माता सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा," परमेश्वर अपने आप को, जो कुछ भी हम इस पृथ्वी पर, माता की भूमिका के विषय में सोच सकते हैं, उससे पहचाना जाना स्वीकार कर लेता है।

अब, जब यीशु ने "हमारे स्वर्गीय पिता" के विषय में बातें कीं, तो उसने पिता का प्रतीक उपयोग किया। वह तुलना करते हुए कहता है, यदि तुम एक सांसारिक पिता के पास जाकर रोटी माँगो, तो वह तुम्हें पत्थर नहीं देगा; और यदि तुम एक सांसारिक पिता के पास जाकर, मछली माँगो, तो वह तुम्हें साँप नहीं देगा। इसी प्रकार, फिर वह बहुत आगे बढ़ जाता है – हमारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे

लिये अच्छी बातें करना चाहता है। यदि यीशु उसकी चीज़ की ओर इशारा करते हुए, जो हम सब जानते हैं - एक सांसारिक पिता का प्रेम - उसे आगे और ऊपर बढ़ा कर कह सकता है, कि जो कुछ भी तुम उस सांसारिक अभिव्यक्ति में देख सकते हो, हमारा स्वर्गीय पिता, उससे कहीं अधिक है, तो आज यही मेरी स्वच्छन्दता है, कि इस पुस्तक में झाँक कर सांसारिक माताओं को उनके शान्तिदायक या प्रेमपूर्ण अभिव्यक्ति में देखूँ, क्योंकि आज का दिन हमें इस विषय पर सुमति व स्मृति देता है, कि माताएं क्या होती है; उनका क्या आशय होता है, और वे क्या करती हैं।

मैं धर्म-शास्त्र में एक सांसारिक माता को देख सकता हूँ। मैं उसके प्रेम को देखकर, उसके आधार पर कह सकता हूँ, "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा।" तो आज हम, किसी अन्य दिन से कितना अधिक, अपनी स्वर्गीय माता पर भरोसा कर सकते हैं, वह *एल शैदाई,* जिसने हमें यह कहने की स्वतन्त्रता दी है, यदि हम एक सांसारिक माता में प्रेम को देखते हैं, तो हमारी स्वर्गीय माता हमें इससे कितनी अधिक शांति देगी। यह बड़ा दुर्भाग्य है कि, सारे नारी-अधिकारवादी आज यहाँ पर नहीं हैं। आप लोग जाकर उन्हें बता दीजियेगा। वे कभी भी विश्वास नहीं करेंगे, कि मैंने यह संदेश सुनाया था।

अब, मैं बाइबिल में वर्णित तीन माताओं को देखता हूँ:
योकेबेद - आपको मूसा की माता का नाम ढूँढ़ने के लिये थोड़ा आगे जाकर निर्गमन 6 को पढ़ना होगा । और वह हमें ऐसे दृष्टिकोण की ओर ले जाती है, जो कि एक विशेष परिस्थिति पर, विशेष रीति से केन्द्रित है, एक माता के प्रेम का ऐसा दृष्टिकोण जिसे देखने पर मैं कह सकता हूँ, "हमारा स्वर्गीय पिता इससे कितना अधिक है।" आप को यह कहानी मालूम है। वे लगभग 400 वर्ष निकट आ रहे थे, जिसकी परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी, कि उसके लोग अर्थात् उसके वंशज ले जाए जाएंगे.... बन्धुवाई में ले जाए जाएंगे और दास बनाए जाएंगे; वे छुड़ाए जाएंगे और उस स्थान पर वापस लौटेंगे, जिसकी परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी। फिरौन इन भविष्यवाणियों के विषय में जानता था। उसे मालूम था, कि समय आ पहुँचा है, और उसने दासों के परिवारों में से सारे नर बच्चों की हत्या करना आरम्भ कर दिया, जिससे कि किसी छुड़ाने वाले के बड़े होने की सम्भावना ही न रहे - सारे नर बच्चे, नील नदी में पाए जाने वाले मगरमच्छों के आगे फेंक दिये गये।

योकेबेद - धर्म-शास्त्र का पहला नाम, जो यहोवा के नाम से जुड़ा है। यह एक सजात या संयुक्त शब्द है, जो उसके नाम को यहोवा से जोड़ता है। इसका आक्षरिक अर्थ है, "यहोवा की महिमा।" वह गर्भवती है, और जैसे - जैसे बच्चा उसके अन्दर विकसित होता है, मिट्टी व सरकण्डों की बनी दास की झोपड़ी में रहते हुए, साथ - साथ उस का भय भी बढ़ता जा रहा होगा - क्या मेरे लड़का होगा या लड़की ? यह जानते हुए कि यदि वह लड़का हुआ, तो उसे एकदम छीन लिया जाएगा, और नदी में फेंक कर मार दिया जाएगा। और वास्तव में जो बच्चा उत्पन्न हुआ, वह लड़का था।

अब मैं चाहता हूँ, कि योकेबेद ऐसे लोगों के प्रति मातृ - प्रेम दर्शाए जो कि निराश एवं निस्साहाय

हैं, जो कि किसी जटिल परिस्थिति में फँसे हों – वर्तमान संदर्भ में, ऐसी परिस्थिति, जिसका चुनाव मूसा ने नहीं किया था;.... जो ऐसी परिस्थिति में फँसे हैं, जिसका सामना करना आपकी सामर्थ के परे है, एक निराशा एवं निस्सहायता जो चारों ओर छाई है, और जो एक ही बात की ओर इशारा करती है: आपका विनाश, आपका विलोपन, आपका अन्त। मैं योकेबेद को इस बच्चे के साथ देखता हूँ, जिसकी हर आवाज़, निकट आते सिपाहियों के खतरे को पास लाती है। इस माँ को देखिये जो एक दासी है, जिसके पास स्वयं के कोई अधिकार नहीं हैं। पूरे तीन महीने, वह उसे छिपाए रखी – किसी तरह पूरे तीन महीनों तक उसने उसकी आवाज़ को दबाकर रखा या उसे रोने नहीं दिया।

आज यहाँ पर ऐसी माताएं हैं, जो उन प्रथम तीन महीनों के दबाव को जानती हैं। प्रति घण्टे प्रति दिन: "क्या वह ढूँढ़ लिया जाएगा?" और वह कुछ भी नहीं कर सकता; मूसा कुछ भी नहीं कर सकता। वह एक उपाय ढूँढ़ती है। किसी तरह, वह नदी के किनारे से सरकण्डे व मिट्टी ले आती है, और एक छोटी टोकरी बनाती है। किसी तरह, वह जान लेती है, कि प्रतिदिन राजकुमारी किस स्थान पर नहाने आती है। मैं निश्चित हूँ, कि दासों के मध्य इसका सामान्य ज्ञान नहीं था। किसी तरह वह मेम्फिस की उस दास नगरी की सड़कों पर से हो कर जाती है, यह जानते हुए कि यदि पता चल गया, तो जैसा हमने पहले कहा था, बच्चे को मार दिया जाएगा। किसी तरह वह उसे सरकण्डों से बनी टोकरी में डालकर ठीक उसी स्थान पर छोड़ देती है, जहाँ पर मिस्र की राजकुमारी उसे देख सके।

और किसी तरह, वह अपनी बेटी मरियम को इस प्रकार छिपाने में सफल होती है, कि जब राजकुमारी मूसा को देखे.... और वास्तव में, क्योंकि वह..., धर्म – शास्त्र बताता है, "एक सुन्दर बालक" था, राजकुमारी उसे पालना चाहती है; और अचानक मरियम का सामने आना – क्योंकि राजकुमारी पहचान जाती है, कि वह एक इब्री बालक है, और यह कहना, "क्या तू चाहती है, कि कोई इब्री धाई तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करे?" और निश्चय ही – आप को शेष कहानी मालूम है – वह फिरौन के घर में एक राजकुमार के समान पाला गया, और अपनी ही इच्छा से, आगे जाकर उनके छुड़ाने वाले के रूप में, उन्हें बन्धुवाई में से बाहर निकालेगा।

अब, इनमें से प्रत्येक माता इस संदेश को इस प्रकार केन्द्रित करेगी, कि यह सभी केसंदर्भ में ठीक नहीं बैठेगा। संदेश का यह भाग उन के लिये सहायक होगा – और मैं सोचता हूँ, कि वे इस मण्डली में शायद अल्प–संख्या में बैठे होंगे, जो किसी परिस्थिति के दबाव में से गुज़र रहे होंगे, जो आपको निस्सहाय एवं निराश छोड़ देती है। और अवश्य ही, कुछ लोग टेलिविज़न द्वारा सुन रहे होंगे। यह संदेश स्वयं–सिद्ध है: यह सांसारिक माँ, उस चीज़ का प्रतीक है, जो कि प्रत्येक माता, एक माँ के अमर प्रेम के विषय में जानती है: वह उन परिस्थितियों से हार नहीं जाएगी; वह अवश्यंभावी पहलू को स्वीकार नहीं करेगी; वह रास्ता खोज निकालेगी, चाहे इस निस्सहाय बच्चे को निराशाजनक परिस्थितियों में से निकालने के लिये, उसे कुछ भी दाम चुकाना पड़े। परन्तु एक दासी होते हुए भी, उसने सीमित साधनों से एक उपाय सोच निकाला। उसने निस्सहाय बालक के लिये एक अमर, अथक प्रेम के द्वारा, एक रास्ता खोज निकाला।

अब आगे बढ़िये: हमारी स्वर्गीय माता – इस वाक्यांश को बिना खेद या व्याख्या करे प्रयोग करने पर – हमारी स्वर्गीय माता, योकेबेद के समान, सेनाओं का यहोवा भी है। उसकी क्षमता की कोई सीमा नहीं है। सारी सृष्टि उसके नियंत्रण में है।

योकेबेद मुझे यह संदेश देती है, कि परमेश्वर के हृदय में, जिस ने उसे यशायाह 66 में, "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा" इस रूप में प्रकट किया, परमेश्वर के उस हृदय में वही प्रेम है, "यदि एक सांसारिक माता हार नहीं मानेगी और हिम्मत नहीं छोड़ेगी, और जब तक वह निस्सहायों की सहायता के लिये रास्ता नहीं खोज लेगी, खोजती ही रहेगी, तो हमारा स्वर्गीय पिता हमें इससे कितना अधिक छुड़ाएगा? यही धर्म-शास्त्र के उस पद का आधार है, जो कहता है, वह तुम्हें सामर्थ से बाहर, परीक्षा में पड़ने न देगा। यही धर्म – शास्त्र के उस पद का आधार है, जो कहता है, मैं तुम्हें न कभी छोडूँगा, और न कभी त्यागूँगा।" और हम इन दोनों को फिर से देखेंगे। यही, निस्सहायों के प्रति अपने प्रेम से वशीभूत परमेश्वर हमारी स्वर्गीय माता है। हो सकता है, आप निस्सहाय हैं; हमारी स्वर्गीय माता एक सर्वसामर्थी सहायक है। वह हिम्मत नहीं हारेगा। वह आपको बिना सहायता के अकेले नहीं छोड़गा।

दूसरी माता: मैं उसे एक भिन्न दृष्टिकोण से देखना चाहता हूँ, क्योंकि उसे इतना अधिक महिमान्वित, अतिरंजित और दैविक बना दिया गया है, कि उसका सांसारिक माता वाला पहलू, जो कि उसका सच्चा पहलू है, लुप्त हो जाता है। यूहन्ना 19, पद 25: मरियम-संसार भर में सबसे सुप्रसिद्ध नाम। मैंने कई वर्षों पूर्व, इस पर खोज की थी – 1957 में: इस देश में मरियम नाम की 3,720,000 महिलाएं हैं । आप चाहे कहीं भी चले जाएं, संसार भर में उसका आदर किया जाता है।

इस पुस्तक में, मैंने ताहिति तक की यात्रा में, उत्तरी द्वीप के एक पुराने गिरजेघर के विषय में चर्चा की है। केन्द्रबिन्दु : मरियम । उस पठार के ऊपर व किनारे ला पाज़, बौलिविया है – संसार का एक मात्रा स्थल, जहाँ पर हवाई – जहाज़ों को उतरने के लिये, ऊपर की ओर उड़ना पड़ता है, संसार का सबसे ऊँचा हवाई – अड्डा। हवाई – अड्डे को छोड़ने के बाद, आप को दूरी पर ऐन्डीस पर्वतमाला दिखाई देती है, फिर आप अचानक एक कगार पर उतर जाते हैं और वह सड़क चौड़ी होकर ला पाज़ तक जाती है, जो कि कगार के नीचे, घाटी में स्थित है। उस ऊबड़-खाबड़ सड़क पर हमें रूकना पड़ा। वहाँ पर एक जुलूस मरियम की मूर्ति को उठाकर ले जा रहा था, और उसके, हृदय में शर (डार्ट) घुसे हुए थे, जो हमें शमौन की बातों की याद दिलाते हैं; और उसे कैथोलिक लोगों के द्वारा, दैविक दर्जा दिया गया है।

उन्होंने एक माँ की भूमिका को बढ़ा-चढ़ा कर अतिरंजित कर दिया है, जैसे कि वह मसीह की दृष्टि में पसंदीदा होने में ही, माँ का चित्रण कर सकती है, क्योंकि वे ये भूल गये हैं, कि एक माता होने के

लिये, परमेश्वर को मरियम की आवश्यकता नहीं थी। उस में वह गुण पहले से ही समाया हुआ था।

मैं मरियम को, दिख्य रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य के रूप में देखना चाहता हूँ। मैं उसे उस रूप में देखना चाहता हूँ, जैसे नये नियम ने उसे प्रकट किया है: एक स्त्री, जो अपने ही पुत्र को नहीं समझ पाई; वह, जिसने अनेक बार, उसके विषय में की गई भविष्यवाणी के बावजूद, उसे सांसारिक आँखों से देखा। मैं उसे, उस की स्वयं की तिरस्कार की भावनाओं में से देखना चाहता हूँ, जो अपने पुत्र को बिलकुल न समझ पाई और जिसने, उसे क्रूस पर लहू – लुहान व मरते हुए लटकते देखकर, अपने भयों को साकार होते हुए देखा। परन्तु फिर भी यूहन्ना 19:25 कहता है, "और उसके क्रूस के पास उसकी माता... खड़ी थी, उसके क्रूस के पास उसकी माता" – और वह एक तिरस्कृत के प्रति प्रेम दर्शाती है।

जिस प्रकार, इस संदेश में, मूसा अपनी सबसे पहली स्थिति में निस्सहाय देखा गया है – जो अपने आप को निस्सहाय समझते हैं, वे स्वयं को उस रूप में देख सकते हैं ; इस विशेष क्षण में, इस विशेष स्वरूप में, एक सांसारिक – माता की दृष्टि में (भविष्य –सूचक समझ सहित – दैविक दृष्टि में नही)ं यीशु, देखा गया, यशायाह के अनुसार, सब मनुष्यों द्वारा तिरस्कृत "वह अपनों के पास आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।"

उसने उसे, सड़कों पर घसीटकर ले जाते हुए, उस पर लोगों को चिल्लाते हुए,थूकते हुए, अपना क्रूस उठाते हुए, देखाथा। उसने खड़े होकर अपने बेटे को देखा, जिसे उसने एक शिशु के रूप में गोद में पकड़ा था। और चाहे उसने कुछ भी सिखाया हो, वह इस समझ से ऊपर उठ ही नहीं पा रही थी, कि वास्तव में वह उसका नहीं था; कि उसे परमेश्वर के अवतरित पुत्र को जन्म देने के लिये, सब स्त्रियों से बढ़कर सम्मान मिला था। उसके लिये, वह उसी का बच्चा था। आप उस की हैरानी को महसूस कर सकते हैं, जब वह 12 वर्ष की आयु का था, उसने पा कर, यरूशलेम से रवाना होने के बाद, वह कहती है, "तेरा पिता और मैं तुझे ढूँढ़ रहे थे – तेरा पिता और मैं।" उस समय भी वह, मैं सोचता हूँ, उसे एक रहस्यमय कथन से डाँट देता है : "मुझे अपने पिता के घर में होना अवश्य है," जहाँ उसका अर्थ उसके स्वर्गीय पिता से था।

इस पुस्तक को लिखने से कुछ समय पूर्व, मैं इस्राएल में लगभग एक घण्टे तक ताबोर पर्वत पर, एक चाँदनी रात को बैठकर, नासरत की बत्तियों को, और उस छोटी पहाड़ी को, जो उसका सीमा चिन्ह है, देख रहा था, और उन बातों के विषय में सोचने लगा, जो नासरत में तब हुई होंगी, जब यीशु ने प्रचार करना आरम्भ किया।

और उसका परिवार – यीशु के द्वारा स्वयं के विषय में उन दावों को सुनकर, उस नगर के नागरिकों के विद्वेष को देखकर, और उन्हें उपहास में यह कहते सुनकर, "क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं ?" – उसे

ऐसे उग्रे लोक – विद्रोह से बचाने आया, जो उसे उन बातों को बोलने से रोकने आए थे, जो वह अपने विषय में कह रहा था। और हृदयहीनता पूर्वक डाँटा जाना, जैसे यीशु ने उन्हें देखकर जब वे कहने लगे, "तेरी, तेरी माता और तेरे भाई तुझे ढूँढते हैं," यह कहा, "कौन है मेरी माता? कौन है मेरा भाई? वे ही, जो मेरे पिता की इच्छा पूरी करते हैं, जिसने मुझे भेजा है। यही मेरा परिवार है।"

इस परिच्छेद में भी नहीं समझते हुए, मैं दोबारा कहा रहा हूँ, उसे लहू – लुहान, मरते हुए, सभी के द्वारा तिरस्कृत देखते हुए भी वह मूर्छित नहीं हो रही थी, वह दूर नहीं भाग रही थी और वह गिर नहीं रही थी। जैसे – जैसे उसके प्राण निकल रहे थे, वह क्रूस के पास खड़ी रही। तिरस्कृत के प्रति प्रेम।

मैं निश्चित हूँ, कि इस पृथ्वी पर नासरत के यीशु के समान, अन्यायपूर्ण कारणों के परिणामस्वरूप तिरस्कृत कोई भी नहीं हुआ है। और मैं क्रूस को हमारे सामने धर्म–वैज्ञानिक अर्थ में नहीं ला रहा हूँ; मैं उसे सांसारिक रीति से उसकी माँ की सीमित समझ के साथ हमारे सामने ला रहा हूँ। उसके लिये, उसका पुत्र दो डाकुओं के बीच लटका हुआ था – घृणा का पात्र, बीभत्सा का पात्र, तिरस्कार का पात्र। उसने उसे नहीं त्यागा। उसका प्रेम नहीं डगमगाया। वह – मैं जानता हूँ, कि प्रत्येक माँ, दर्द सहना जानती है – अपने पुत्र के साथ इस प्रकार का बरताव होते हुए देखने में, केवल स्वयं यीशु से या स्वर्गीय पिता से ही नीचे थी। वह निश्चय ही, दर्जे में तीसरी थी, किन्तु वह वहाँ पर खड़ी रही। चाहे समस्त संसार ने उसे तिरस्कृत कर दिया था, वह उसे तिरस्कृत नहीं कर सकती थी।

जिस प्रकार, योकेबेद आपको शांति दे सकती है – "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा" – जैसे योकेबेद आपको शांति दे सकती है, चाहे आपकी या मेरी परिस्थिति कितनी भी निराशाजनक हो, हमारी स्वर्गीय माता रास्ता खोज निकालेगी, और हम इस प्रकार, उसकी बाहों में आराम पा सकते हैं। यदि आप टेलिविज़न से, रेडियो से या यहाँ पर बैठ कर सुनने वालों में से ऐसे व्यक्ति हैं, जो सभी के द्वारा अस्वीकृत हो चुके हैं, तो हमारी स्वर्गीय माँ हमारा साथ देगी, और आपको स्वीकार करेगी। "जो कोई मेरे पास आएगा, इस पद को समझें, जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी भी निकाल न दूँगा।" यह हमारी स्वर्गीय माता है – चिन्ता न करें, वह हमें सम्भालेगी और हमारे साथ बाकी संसार के लागों के समान बरताव न करेगी। तिरकृत के प्रति प्रेम।

मैं तीसरी मात्रा के चित्रण के लिये 11 शमूएल 21 में जाता हूँ। उसका नाम: रिस्पा

11 शमूएल 21. वह शाऊल की केवल एक सहेली थी, पत्नी भी नहीं – एक रखैल, परन्तु उससे दो पुत्र उत्पन्न हुए। बिन्यामीनी शाऊल पहला राजा था,जिसे इस्राएल का राज्य करने के लिये शमूएल द्वारा अभिषिक्त किया गया था । प्रारम्भ में, परमेश्वर ने उसे एक नया हृदय प्रदान किया और वह एक महान राजा था, परन्तु जैसे – जैसे उसकी सामर्थ बढ़ती गई, वह बदल गया और उसने आत्महत्या कर ली और उसका शव उसके शत्रुओं द्वारा गिलबोआ के पर्वत के पास दीवार पर कीलों से ढोंक दिया गया; और मरने से पूर्व ही वह अपना समाधि – लेख लिख बैठा, "मैं मूर्ख बन गया।"

उसने जो अन्य मूर्खताएं कीं, उनमें से एक थी, कि उसने एक पवित्र शपथ को तोड़ दिया, जो यहोशू ने प्राचीन काल में खाई थी, जब इस्राएली प्रतिज्ञात देश में आए और यहोशू ने गिबोनियों के साथ शपथ खाई थी, कि इस्राएल उन्हें कभी भी तलवार से घात नहीं करेगा। शाऊल ने, घमण्ड में आकर, उस शपथ को तोड़ दिया। उसने गिबोनियों को मार डाला; उनका पीछा किया और तलवार से मार डाला।

शाऊल के आत्म हत्या करने और दाऊद के राजा बनने के बाद गिबोनी दाऊद के द्वारा बुलाए जाने पर आए, क्योंकि परमेश्वर ने देश में एक भारी अकाल भेजकर इस्राएलियों को, शाऊल के कार्य के लिये दण्ड दिया। भारी अकाल पड़ा। और इसके लिये परमेश्वर को पुकारने के समय..... दाऊद ने परमेश्वर की दोहाई दी, और परमेश्वर ने कहा, कि यह इसलिये हुआ, क्योंकि शाऊल ने शपथ तोड़ दी थी। तो दाऊद ने बचे हुए गिबोनियों को बुलाया और उनके आने पर उनसे पूछा, कि वह शाऊल के कार्य के लिये क्या प्रायश्चित करे, जिससे उसने सारे देश को तलवार से घात किया था।

यह बहुत क्रूर दिन था, और उस क्रूर दिन के दायरे में, एक निर्दयी संदर्भ के दायरे में, उन्होंने कहा कि वे शाऊल के सातों बेटों को चाहते थे जिनमें वे दो बेटे भी शामिल थे, जिन्हें रखैल रिस्पा ने जन्म दिया था। वे उन सातों बेटों को चाहते थे, ताकि उन्हें गिबा की पहाड़ी पर लटका दें। दाऊद ने उन्हें बेटे सौंप दिये, और उन्होंने सातों को गिबा की पहाड़ी पर फाँसी देदी। जिस समय उन्हें फाँसी दी गई, बाइबिल बताती है, कि वह जव की फसल काटने का महीना अर्थात् अप्रैल था। अप्रैल से लेकर अक्टूबर तक, जब तक वर्षा ऋतु न आ जाए, उन बेटों को उस पहाड़ी पर लटके रहना था। गिबोनियों ने उन्हें सदा के लिये लटके रहने देने का फैसला किया था।

अब, जब रिस्पा ने, जो इनमें से दो पुत्रों की माता थी, यह सुना, कि बेटे वहाँ पर लटके थे, जिनमें उसके दो पुत्र भी शामिल थे, वह उसी समय उस पहाड़ी पर जाती है, जैसा मैंने कहा, जो समय जव की कटनी का महीना या अप्रैल था और अपने साथ टाट लेकर आती है, या तो विलाप करने के लिये या बैठने के लिये या एक छोटा तम्बू बनाने के लिये। और जव की कटनी के समय से अक्टूबर तक, जब तक वर्षा ऋतु न आई, बाइबिल बताती है कि वह रात और दिन उसी पहाड़ी पर रही।

उसने दिन में चिड़ियों को और रात को जानवरों को उन्हें छून न दिया। अप्रैल.... मई...जून...जुलाई...अगस्त....सितम्बर...अक्टूबर....सात महीने। वह सात लम्बे महीनों तक उस पहाड़ी पर बैठी रही। दिन; रात। दिन में, मैं फिर कहता हूँ, चिड़ियों को उड़ाने और रात में जानवरों को भगाने।

अब कुछ घिनावना होने का खतरा जानते हुए, मैं मस्तिष्क को, उन लटके हुए सात शवों का स्पष्ट चित्रण करने के लिये, शब्द चित्रों के द्वारा तैयार करता हूँ। ढाँचे पर से माँस सड़ कर गिरने लगेगा, सूर्य काला पड़ जाएगा, और जैसे – जैसे महीने गुज़रते जाएंगे, थोड़ा-थोड़ी करके वे.....

(उनमें से बहुत दुर्गन्ध आने लगेगी)। उस पहाड़ी पर, उन सात क्रूसों के नीचे बैठे रहने का अर्थ है, निरंतर मितली और उस पहचानने – योग्य दशा से लेकर उस घिनावनी एवं डरावनी दशा का निरंतर सामना जैसे – जैसे, थोड़ा – थोड़ा करके हडिडयों पर से माँस लटकने लगेगा, और शव के सड़ने पर, टुकड़ेव अंग ज़मीन पर गिरते जाएंगे। मैं शब्दों का प्रयोग करके, हम सब को, एक चीज़ को घिनावना बनते दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ।

जब उसने आरम्भ किया – आप उसकी भावनाओं और लगाव को महसूस कर सकते हैं, ये उसके बेटे हैं, और वे पेड़ पर मृतक लटके हुए हैं, परन्तु जब वह थकी हुई दशा में, चिड़ियों व जानवरों को भगाती रहती है, तो यह, जैसा मैंने कहा, एक घिनावनी चीज़ बन चाता है। रिस्पा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह वहाँ पर रात...., सवेरे..., दोपहर...., रात.... टिकी रही। अपने प्राण को जोखिम में डालकर, वह चिड़ियों को उड़ाती रही; वह जानवरों के भगाती रही।

अन्ततः दाऊद ने – वह महान हृदय, जिसे परमेश्वर ने "अपने हृदय के सदृश्य मनुष्य" कहा – अन्ततः उसने इसके विषय में सुना। स्वयं हैरान होकर, उसने आज्ञा दी, कि उन शवों के जो कुछ भी टुकड़े बचे हों, उन्हें उतारा जाए; उन्हें योनातान व शाऊद की हडिडयों के साथ रखकर, एक सम्मानीय दफन का स्थान दिया जाए। और रिस्पा को सम्मान दिया गया, जिसके वह, उस भयानक पहाड़ी पर व्यवहार के कारण योग्य गिनी गई।

यदि योकेबेद, परमेश्वर के अमर, अथक, दृढ़, अविरल स्वभाव का चित्रण करती है, जब तक वह निस्सहायों के लिये रास्ता न खोज निकाले ; और मरियम उस गुण का चित्रण करती है, कि चाहे सभी उसके पुत्र का तिरस्कार करें, वह उसका साथ देगी; रिस्पा, एक माँ के स्थायी प्रेम के उस अविश्वसनीय पहलू का चित्रण करती है, जिससे वह अपने बेटों को सड़ते हुए और घिनावनी चीज़ बनते हुए देखती रहेगी, परन्तु उसका प्रेम कम न होगा।

यदि ये सांसारिक माताएं इस प्रकार का प्रेम दर्शा सकती हैं, तो आज के दिन, जब हम माताओं को याद करते हैं, क्या हम अपनी निस्सहायता, अस्वीकृति या निरी निन्दा की परिस्थिति के पार देख कर परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं , कि "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा?" आज आपकी परिस्थिति चाहे कैसी भी हो, मुझे हर्ष है, कि यहाँ पर यह गिरजाघर परमेश्वर के प्रेम का प्रचार करने स्थित है, न कि कोई बकवास करने, जो कि परमेश्वर के इस स्वभाव पर परदा डाल देता है।

वह परमेश्वर है, और वह बदलता नहीं। वह *एल शैदाइ* है, वह माता जो शांति देती है। वह आपका परमेश्वर है और वह आपको न छोड़ेगा, न त्यागेगा। अपनी परिस्थिति में हियाव न छोड़ें: "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को सम्भालती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूँगा।"

प्रतिलिप्यधिकार ©2007 पास्टर मेलिसा स्कॉट–सर्वाधिकार सुरक्षित।
Copy right © 2007 Pastor Melissa Scott All Rights Reserved